International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

हिंदी गज़ल में भाषाई प्रयोग

डॉ. विक्रम सिंह बारेठ
सहायक आचार्य – हिंदी विभाग
गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर (अलवर)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी गजल में भाषाई प्रयोग की प्रकृति, विशेषताओं तथा संरचनात्मक विविधताओं का विश्लेषण करता है। भाषा को आत्माभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम मानते हुए यह शोध दर्शाता है कि गजल की भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि सौंदर्यबोध और प्रभावोत्पादकता का आधार भी है। गजल में संक्षिप्तता, सांकेतिकता, सहजता, कोमलता, व्यंग्यात्मकता तथा गेयता जैसे गुण इसकी भाषिक पहचान को विशिष्ट बनाते हैं। प्रत्येक शेर सीमित शब्दों में व्यापक अर्थ संप्रेषित करता है, जिससे भाषा का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी गजल की भाषिक संरचना बहुआयामी है, जिसमें अरबी–फारसी–उर्दू, संस्कृतनिष्ठ हिन्दी, हिन्दुस्तानी तथा अंग्रेजी शब्दावली का संतुलित प्रयोग देखने को मिलता है। इन विभिन्न भाषिक रूपों के माध्यम से गजलकार अपने भावों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार, हिन्दी गजल की भाषा न केवल सौंदर्य और भावनात्मकता का समन्वय है, बल्कि यह समयानुकूल परिवर्तनशीलता और जनसामान्य से जुड़ाव का भी सशक्त माध्यम है।

मुख्य शब्दः हिन्दी गजल, भाषाई प्रयोग, संक्षिप्तता, सांकेतिकता, भाषिक संरचना

परिचय

आत्माभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन भाषा है। व्यवहार में जिस तरह अलग–अलग प्रसंगों में अलग–अलग तरह की भावात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसी तरह हर साहित्यिक विधा में भाषा के प्रयोग में विभिन्नता मिलती है। ग़ज़ल की शषा का भी अपना एक विषिष्ट रूप होता है। ग़ालिब ने कहा है कि–

”बलाए–जाँ है ग़ालिब उसकी हर बात
इबारत क्या, इषारत क्या, अदा क्या।“[1]

इस शेर में ग़ालिब ने ग़ज़ल में तग़ज्ज़ुल पैदा करने वाले तीनों अहम तत्वों इबारत (भाषा), इषारत (सांकेतिकता) तथा अदा (षैली) को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है। डॉ. युसुफ हुसैन लिखते हैं कि ”अगर ग़ज़ल के किसी शेर में सिर्फ इषारे की खूबी मौजूद हो और इबारत और अदा में भद्दापन पाया जाता हो तो शेर अधूरा और बेअसर रहेगा।“[2]

ग़ज़ल की भाषा में सांकेतिकता, संक्षिप्तता आदि के महत्त्व के बारे में काफ़ी पहले से काफ़ी कुछ लिखा जा रहा है। पाष्चात्य एवं पौर्वात्य दोनों काव्य–षास्त्रों में पठन सिद्धान्त (जेमवतल

व तिमंकपदह) पर काफ़ी जोर दिया गया है और इस सिद्धान्त से कि किसी पाठ (ज्मगज) को पढ़ने के कई तरीके हो सकते हैं, प्राचीन अरबी, संस्कृत तथा लगभग सभी विदेषी काव्यषास्त्री सहमत है। हमारा ग़ज़ल संबंधी काव्यषास्त्र मानी आफ़्रीनी (अर्थ–सौन्दर्य) तथा मज़्मूनआफ़्रीनी (विषय–सौन्दर्य) एवं इनके विभिन्न पहलूओं पर टिका हुआ है।

"षेर को मज़्मून सेती क़द्र हो है आबरू
क़ाफ़िया सेती मिलाया क़ाफ़िया तो क्या हुआ।"[3]

(आबरू)

"अगरचे शेर मोमिन भी निहायत ख़ूब कहता है
कहाँ है लेक मानी बन्द–ओ–मज़्मूँयाब अपना सा।"[4]

(मोमिन)

अच्छी ग़ज़ल की एक बहुत बड़ी विषेषता है कि इसमें आये शब्दों को आपस में मुनासिब होना चाहिए इस सन्दर्भ में शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी साहब के बयान को ज्यों का त्यों यहाँ दर्ज करना ठीक होगा–

"इसी तरह 'फ़सानए–अजायब' के मुखपृष्ठ पर 'मुस्हफ़ी' के शेर का हवाला देकर–

"यादगारे–ज़माना हैं हम लोग
याद रखना फ़साना हैं हम लोग

ग़ालिब प्रषंसा के अंदाज में लिखते हैं कि 'याद रखना' 'फ़साना' के वास्ते कितना मुनासिब है। अल्फ़ाज़ को आपस में मुनासिब होना चाहिए। ये मुनासबत लफ़्ज़ी (षाब्दिक) भी हो सकती है और मानवी (अर्थगत) भी। मुनासबते–लफ़्ज़ी–ओ–मानवी (षब्द–औचित्य और अर्थ–औचित्य) की बारीकियों को मीर 'उस्लूब' (षैली) शब्द से प्रकट करते है।

मीर शायर भी ज़ोर कोई था
देखते हो न बात का उस्लूब।"[5]

(पहला दीवान)

कथ्य को भाषा शैली की नवीनता एक नया व अनूठा प्रभाव प्रदान करती है। जितनी बार देखा पढ़ा जाए उतनी बार एक नये प्रभाव का अहसास हो।

"कोई हद ही नहीं शायद मोहब्बत के फ़साने की,
सुनाता जा रहा है, जिसको जितना याद आता है।"[6]

ग़ज़ल एक ऐसी विधा है जहाँ सिर्फ़ कह देना ही काफ़ी नहीं बल्कि किस तरह कहा जाए, यह बात भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। ग़ज़ल में भाषा का अपना महत्त्व है। चूंकि ग़ज़ल में अपनी बात कहने के लिए ग़ज़लकार के पास बहुत ज़्यादा स्पेस नहीं होता, इसलिए उसे शब्दों का चुनाव बहुत सोच–समझकर और इस तरह करना होता है कि साधारण से साधारण शब्द भी मानीख़ेज हो उठे।

ग़ज़ल की भाषा की कुछ सामान्य विषेषताओं को हम इस तरह देख सकते हैं–

(1) संक्षिप्तता– ग़ज़ल का हर शेर अपना एक स्वतंत्र अर्थ प्रकट करता है। इतने छोटे से कलेवर (दो पंक्ति) में जो बात कहनी होती है वह बहुत ही संक्षिप्तता के साथ कहनी होती है। भाव प्रकट करते समय शब्द मर्यादा के साथ–साथ रदीफ़ काफ़िया का भी ध्यान रखना पड़ता है। दो पंक्तियों के शेर में पूरे आषय को प्रकट करने के लिए भाषा का संक्षिप्त और शब्दों का अर्थ से लबरेज होना बहुत जरूरी है। संक्षिप्तता के लिए ग़ज़ल में मँजे हुए शब्दों का प्रयोग किया जाता है। कभी–कभी एक ही शब्द कई भाव प्रकट करता है, जैसे गागर में सागर भरना।

(2) सांकेतिकता– संक्षिप्तता के कारण ग़ज़ल में बात को बहुत खोल कर या विस्तार से नहीं कहा जाता बल्कि बात का इषारा भर कर दिया जाता है। पाठक या श्रोता इस इषारे या संकेत से अर्थ ग्रहण करता है। दुष्यंत कहते हैं–

"ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा
मैं सज़दे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा।"[7]

(3) सहजता– 'सरलता' व 'सहजता' भी ग़ज़ल की भाषा की एक विषेषता है। जो कहा जाए वह सरल व सहज हो। ऊबड़–खाबड़ शब्दों के प्रयोग से ग़ज़ल बेअसर हो जाती है। सहजता से ग़ज़ल खिलती हैं, उसका एक–एक भाव खुलता है। जिस सहजता से आटे में से बाल निकाला जाता है उसी सहजता से ग़ज़ल से आषय निकलता है। ग़ज़ल की भाषा पर विचार करते हुए मौलाना 'हाली' ने भी इसी बात पर जोर दिया है–"ग़ज़ल में आवष्यक है कि अन्य काव्यरूपों की अपेक्षा सादगी और सरलता का अधिक ध्यान रखा जाए।"[8]

दुष्यंत कुमार का यह शेर कितना सहज मगर कितना पुरअसर है–

"कहाँ तो तय था चिराग़ाँ हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए।"[9]

(4) कोमलता– ग़ज़ल बनी ही है, कोमल भावनाओं का वहन करने के लिए। आषिक़ माषूक के कोमल वार्तालाप से ही ग़ज़ल की शुरूआत मानी जाती है। इसके शब्दों में एक मिठास होती है जो इसके असर को देर तक बनाए रखती है। कोमलता एवं लोच के कारण ही हर सहृदय इससे अपने आप को 'कनेक्ट' कर पाता है। आजकल ग़ज़ल सामाजिक विषयों एवं विसंगतियों को अभिव्यक्त कर रही है अतः कहीं–कहीं इसमें कोमलता को भंग करने वाले शब्दों का भी इस्तेमाल होता है। जिससे ग़ज़ल कई बार सपाटबयानी बनकर रह जाती है। यह ठीक है कि ज़माने के साथ ग़ज़ल का मुख्य कार्य विद्रूपताओं को उद्घाटित करना हो गया है और उसका स्वर व्यंग्यात्मक हो गया है, तो भी ग़ज़लों में कोमलता का ध्यान रखकर उसे सपाटबयानी बनने से बचाया जा सकता है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें हैं।

(5) प्रभावोत्पादकता– प्रभावोत्पादकता ग़ज़ल की भाषा की और एक विषेषता है। ग़ज़ल में कहन अहम होती है और यह कहन प्रभावोत्पादक शब्दों के प्रयोग से और निखर उठती है। दुर्बोधता, विचित्र उपमा–उत्प्रेक्षा शब्दों की नाज़ायज कसरत, पाण्डित्य प्रदर्षन आदि बातें

ग़ज़ल की प्रभावोत्पादकता में ख़लल ड़ालते हैं। ग़ज़ल में मात्र तुक, रदीफ़, काफ़ीया जोड़ने से ग़ज़ल तकनीकी तौर पर तो ठीक लग सकती है, मगर वह प्रभावात्मक नहीं हो सकती। ग़ज़ल में तग़ज़्ज़ुल पैदा करने के लिए शब्द व अर्थ का कहन के अनुरूप सटीक सामंजस्य होना चाहिए। अतः तगज़्ज़ुल के लिए ग़ज़ल की भाषा का प्रभावोत्पादक होना निहायत ज़रूरी है। दुष्यंत का यह शेर देखिए–

”सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं।
मेरी कोषिष है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।“[10]

(6) व्यंग्यात्मकता– व्यंग्यात्मकता हिन्दी ग़ज़ल भाषा की जान है। ऐसा नहीं है कि उर्दू ग़ज़ल भाषा में व्यंग्यात्मकता नहीं पाई जाती, उर्दू की ज़दीद ग़ज़ल में व्यंग्यात्मकता खूब मिलती है, परंतु हिन्दी ग़ज़ल ने अपने लिए जिन विषयों का चयन किया है उनकी अभिव्यक्ति के भाषा का व्यंग्यात्मक होना आवष्यक है। व्यंग्यात्मकता से ग़ज़ल में रोचकता उत्पन्न होती है। व्यंग्य दोषों एवं कमजोरियों के प्रति ध्यान आकर्षित करता है जिससे सुधार की प्रवृत्ति जागृत होती है। हर ग़ज़लगों शायर ने अपनी ग़ज़ल में व्यंग्य को अहम स्थान दिया है। व्यंग्यात्मकता हिन्दी ग़ज़ल भाषा की एक अन्यतम विषेषता कही जा सकती है। कुछ शेर देखिए–

”हो न कंबल तो लोग रातों को,
ओढ़ लेते हैं आसमान यहाँ।“[11]
”भूख है तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ
आजकल दिल्ली में है ज़ेरे बहस ये मुद्दआ।“[12]
”आँख पर पट्टी रहे और अक़्ल पर ताला रहे।
अपने शाहे वक़्त का यूँ मर्तबा आला रहे।।“[13]

(7) गेयता– गेयता ग़ज़ल का एक प्रमुख गुण है जो भाषा की रवानी से ही उसमें पैदा किया जा सकता है। गीत की ही तरह ग़ज़ल की भाषा भी लयबद्ध होती है। काव्य का प्रेरणा स्रोत राग ही है। ग़ज़ल भी तुक व काफ़िये में गायी जाती है। ग़ज़ल की कोमलकांत पदावली संगीतमय होती है। ग़ज़ल में भाव और संगीत का अपूर्व संगम देखने को है। ग़ज़ल में भाव और संगीत का अपूर्व संगम देखने को मिलता है। गुनगुनाने योग्य होने के कारण ग़ज़लें अधिक देर तक स्मृति में सुरक्षित रहती है। हसरत मोहानी साहब की ये ग़ज़ल है, किसे याद न होगी। गुलाम अली साहब की तो पहचान इस ग़ज़ल से वाबस्ता है–

”चुपके–चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है,
हमको अब तक आषिक़ी का वो ज़माना याद है।“[14]

ये ग़ज़ल की भाषा की कुछ प्रमुख विषेषताएं थी। ग़ज़ल में इस्तेमाल किये जाने वाले शब्द इतने असरदार होते हैं कि अगर उस जगह से वह शब्द उठा दिया जाये तो पूरा प्रवाह और प्रभाव बिखर जाता है। भाषा में लफ़्जी रिआयत (षाब्दिक संबंध) पैदा करना ग़ज़लगो शायर का फ़न माना जाता है। हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना की बात करे तो हिन्दी ग़ज़ल की

भाषा में मुख्यतः चार तरह की शैलियां या यों कहे कि चार तरह की शब्दावली से युक्त भाषा के दर्षन होते हैं—

1. अरबी—फ़ारसी उर्दू की शब्दावली युक्त भाषा
2. संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शब्दावली युक्त भाषा
3. फ़ारसी उर्दू तथा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के सरल शब्दों से युक्त हिन्दुस्तानी भाषा
4. अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग वाली भाषा

अरबी—फ़ारसी—उर्दू शब्दों वाली भाषा— हिन्दी में ग़ज़ल की अवधारणा फ़ारसी—उर्दू से आई है अतः इसमें उर्दू—फ़ारसी के शब्दों की बहुलता होना स्वाभाविक है। भारतेन्दु हरिष्चन्द्र से लेकर आज तक के ग़ज़लकार अपनी ग़ज़लों में उर्दू—फ़ारसी के शब्दों तथा फ़ारसी के व्याकरणानुसार समासों का प्रयोग करते रहे हैं। भारतेन्दु की एक ग़ज़ल के चंद शेर बानगी के तौर पर देखिए—

”फिर आई फ़स्ले—गुल फिर ज़ख़्मदह रह रह के पकते हैं,
मेरे दागे—ज़िगर पर सूरते—लाला लहकते हैं,
रूखे—रोषन पे उसके गेसुए शबगूं लटकते हैं,
क़यामत है मुसाफिर रास्तः दिन को भटकते हैं।
उड़ा दूंगा ‘रसा’ मैं धज्जियां दामाने—सहरा की,
अबस ख़ारे—बियाबां मेरे दामन से अटकते हैं।“[15]

इस ग़ज़ल में फ़स्ले—गुल, दागे—ज़िगर, सूरते—लाला, रूखे—रोषन, गेसूए—षबगूं, दामाने—सहरा, ख़ारे—बियाबां आदि सामासिक पद फ़ारसी व्याकरण शास्त्र के आधार पर प्रयोग किये गये हैं।

शमषेर बहादुर सिंह की ग़ज़लें उर्दू के गहरे रंग में रंगी हैं। उनकी ग़ज़लों को यदि उर्दू लिपि में लिख दिया जाये तो वे उर्दू की बेहतरीन ग़ज़लें कहला सकती हैं। उन पर उर्दू शब्दावली ही नहीं उर्दू भाषा की पूरी तहजीब का गहरा असर दिखाई देता है—

”ये शोख़ चाल तेरी क़ाफ़िराना मस्ताना,
किसी का खाबो—ख़याले शबाना मस्ताना।
सुना चुका है मेरे कुंजे—आफ़ियत में दिल,
कलामे—षौक अजब वालेहाना मस्ताना।।“[16]

इन शेरों में उर्दू—फ़ारसी के शब्दों को स्पष्ट देखा जा सकता है। इसी तरह हिन्दी के सर्वाधिक प्रसिद्ध ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार ने भी अपनी कई ग़ज़लों में उर्दू—फारसी की शब्दावली का प्रयोग किया है।

”इस क़दर पाबंदी—ए—मजहब कि सदके आपके,
जब से आज़ादी मिली है, मुल्क में रमज़ान है।“[17]

इसी तरह निराला, नरेन्द्र वषिष्ठ, ज्ञानप्रकाष विवेक, सूर्यभानु गुप्त आदि कई ग़ज़लकारों के यहाँ उर्दू—फ़ारसी शब्दावली का ख़ूब इस्तेमाल दिखाई देता है। हिन्दी ग़ज़ल में उर्दू—फ़ारसी

शब्दावली के प्रयोग पर डॉ. राम प्रकाष कहते हैं–"हिन्दी ग़ज़ल की शब्दावली से उर्दू–फ़ारसी के शब्दों को अलग करना असम्भव तो नहीं, किन्तु कठिन अवश्य है। उर्दू फ़ारसी शब्दावली की भी अपनी एक रवानी है। अतः उर्दू–फ़ारसी के प्रयोग से हिन्दी ग़ज़ल की भाषा को एक गति और जीवंतता प्राप्त होती है।"[18] हने का मतलब ये है कि हिन्दी ग़ज़लों में बहुत जगह उर्दू–फ़ारसी शब्दावली, मुहावरें, उर्दू–फारसी का लबो–लहजा दिखाई पड़ता है, अन्तर होता है तो केवल लिपि का शब्दों के प्रयोग के साथ–साथ हिन्दी में फ़ारसी के व्याकरणिक प्रयोग भी देखने को मिल जाते हैं मसलन बहुवचन बनाने के लिए। इनामात, खयालात, जज़्बात आदि शब्द फ़ारसी व्याकरणानुसार बहुवचन बने हैं न कि हिन्दी व्याकरण के अनुसार। इसी प्रकार 'तेरा' को 'तिरा' तथा 'मेरा' को 'मिरा' पढ़ने लिखने की और बहर के हिसाब से हिन्दी के कई अक्षरों को दबाकर पढ़ने की छूट भी फ़ारसी व्याकरणानुसार ले ली गई है।

संस्कृतनिष्ठ हिन्दी या शुद्ध हिन्दी वाली भाषा– हिन्दी ग़ज़ल को हिन्दी ग़ज़ल बनाने के लिए बहुत से विद्वान अपनी ग़ज़लों में संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली के प्रयोग पर जोर देते हैं। हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में हिन्दी में सोचने रचने के लिए ज़हीर कुरैषी सर्वोपरि है। उनका तो यहाँ तक कहना है कि–"अधिकतर हिन्दी ग़ज़लें देवनागरी लिपि में छपी हुई उर्दू मुहावरे की ग़ज़लें होती हैं, जिनमें एक–दो स्थानों पर एक–दो भारी–भरकम हिन्दी के शब्द डालकर दिग्भ्रमित करने का यत्न किया जाता रहा है।"[19]

अपनी अभिव्यक्ति के लिए शुद्ध हिन्दी अपनाने वाले हिन्दी ग़ज़लकारों में निराला, चन्द्रसेन विराट, विकल साकेती, भवानी शंकर, कुंअर बेचैन आदि के नाम लिए जा सकते हैं। निराला की एक तत्सम शब्दावली युक्त ग़ज़ल के शेर उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

"मन हमारा मग्न दुख की दुर्धरा में हो गया
कुछ न था तब लग्न वह, विष्वम्भरा हो गया
इन्द्र के अनुचर घनों ने, प्रलय की, तो डूबकर
जन्म पाया जलधि में, फिर अप्सरा हो गया
विष्व को वैषयिकता से सीख देने के लिए
देह छोड़ी स्नेह से ज्योतिस्सरा हो गया।"[20]

हिन्दी ग़ज़ल के अभिव्यंजना षिल्प में अभिवृद्धि हेतु हिन्दी शब्दों का प्रयोग ख़ूब मिलता है। बलवीर सिंह 'रंग' के दो शेर देखिए–

"आइये मरूभूमि में उद्यान की चर्चा करें।
ध्वंस के सन्दर्भ में निर्माण की चर्चा करें।
निर्झरों, नदियों, तडागों की प्रगति को साधुवाद
सिन्धु में उठते हुए तूफान की चर्चा करें।"[21]

हिन्दुस्तानी स्वरूप

भाषा के संबंध में भी अधिकतर हिन्दी ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार के पदचिह्नों पर चले हैं। जिस प्रकार दुष्यंत कुमार ने हिन्दी उर्दू के बीच की दूरी को कम करते हुए आम बोलचाल

की भाषा को ग़ज़ल लेखन के लिए इस्तेमाल किया, उसी प्रकार बहुत से अन्य ग़ज़लकारों ने भी किया। डॉ. रोहिताष्व अस्थाना लिखते हैं–"हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में रचनाधर्मियों का एक ऐसा वर्ग सामने आया, जिसने समास–गुंफित उर्दू–फ़ारसी भाषा तथा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा के बीच का मार्ग अपनाते हुए हिन्दी रचना–यात्रा को जारी रखा। इनमें निरंकारदेव सेवक, ज़हीर कुरैषी, गिरिजाषरण अग्रवाल, कुंअर बेचैन, रामवतार चेतन, डॉ. उर्मिलेष जैसे शीर्षस्थ ग़ज़लकारों का प्रमुख स्थान है। इन्होंने अपनी हिन्दी प्रकृति की ग़ज़लों में भाषा के अतिवादी स्वरूप के स्थान पर आम आदमी द्वारा बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग करके हिन्दी ग़ज़ल को सर्वहारा वर्ग के आंगन तक पहुँचाने का प्रयास किया। इन रचनाधर्मियों ने ग़ज़ल को सरल हिन्दी मुहावरे में सोचा, लिखा और गा–गाकर आम आदमी की परिवेषगत व्यथा को आम आदमी तक पहुँचाया। इन ग़ज़लों की भाषा में हिन्दी के साथ–साथ सरल उर्दू–फ़ारसी के वे शब्द भी समाहित हो गये जो दैनिक बोलचाल की भाषा में घुल–मिल गए हैं।"[22]

सरल सहज हिन्दुस्तानी भाषा में लिखी गई ग़ज़लों से कुछ शेर उदाहरण के लिए प्रस्तुत है–

(प) **"ज़िन्दगी अपनी कदम अपने हैं मंज़िल अपनी**
राह चलने को बहाने की ज़रूरत क्या है।"[23]
(पप) **धीरे–धीरे टूट रहे हैं खुषफ़हमी के किले तमाम**
मीलों पीछे छूट गए हैं खुषियों के सिलसिले तमाम।"[24]
(पपप) **जहाँ इंसान की औकात से दौलत बड़ी होगी,**
महल बनकर खड़े होंगे, झुकी हर झोंपड़ी होगी।
जरा सोचो कि मुंह तक रोटियां क्यों आ नहीं पाईं,
तुम्हारी ही कलाई में कहीं गड़बड़ी होगी।"[25]

उर्दू–फ़ारसी एवं संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की अतिवादिता से बचकर सहज सरल हिन्दुस्तानी भाषा में ख़ूब ग़ज़लें रची जा रहीं हैं, और कहना न होगा कि भाषा के एतबार से हिन्दी ग़ज़ल के लिए यह मध्यम मार्ग ही श्रेष्ठ मार्ग है।

अंग्रेजी शब्दावली वाली भाषा– आम बोलचाल की भाषा में घुले मिले अंग्रेजी शब्दों का ग़ज़ल में प्रयोग बहुत नई परम्परा नहीं है। अकबर इलाहाबादी ने अंग्रेजी सभ्यता व षिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करने के लिए अपनी ग़ज़लों में अंग्रेजी शब्दों का खूब प्रयोग किया था। हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में साठोत्तरी ग़ज़ल में अंग्रेजी शब्दों का ज़्यादा प्रयोग दिखाई देता है। बहुत से अंग्रेज़ी शब्द हिन्दी में इस तरह घुल–मिल गये हैं कि उन्हें अलग करना नामुमकिन है जैसे– नोटिस, पुलिस, डॉक्टर, पार्टी, फार्म, फरवरी, अफसर, मिनट, रेड़ियों, बस, क्लब, फैषन, इंजन इत्यादि–इत्यादि। अंग्रेजी शब्दों से युक्त कुछ शेर उदाहरण के लिए देखिए–

(प) **हर लम्हा ज़िन्दगी के पसीने से तंग हूँ**
मैं भी किसी कमीज के 'कॉलर' का रंग हूँ।"[26]

(पप) ये कम्प्यूटरों के तो बस की नहीं है
कोई भूल जो दरअसल हो गई है।"[27]
(पपप) वक़्त तस्वीरें चुराता ही रहा हम भी मगर
नित नई तस्वीर दिल के 'फ्रेम' में मढ़ते रहे।"[28]
(पअ) वो जो पूरे शहर का 'गाईड' है
उसको अपना ही घर नहीं मालूम।"[29]

ग़ज़ल में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग एकदम आवष्यक होने पर ही किया जाना चाहिए, वरना ये भरती के शब्द लगने लगते हैं, और ग़ज़ल की लय व अभिव्यंजना में बांधा पहुँचा सकते हैं। हिन्दी ग़ज़ल में इन चार भाषा शैलियों के अलावा डॉ. सरदार मुजावर अपनी पुस्तक "हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना" में देषज शब्दों वाली भाषा का भी उल्लेख करते हैं। देषज शब्दों में वे टपकना, थरथराना, सिसकना, कूकना, चुलबुला, खट–पट, चिड़–चिड़ आदि शब्दों को गिनाते हैं। यदि ध्यान से देखा जाए तो ये या इस तरह के शब्द हिन्दुस्तानी भाषा के अन्तर्गत ही आ जाते हैं, अतः इनका अलग से वर्गीकरण करने की कोई आवष्यकता प्रतीत नहीं होती। अंत में रोहिताष्व अस्थाना के शब्दों में–"भाषिक संरचना की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल में भाषा के तीन स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं। इनमें दुष्यंत कुमार, शमषेर बहादुर सिंह, निराला आदि की ग़ज़लों में समास गुंफित उर्दू भाषा, चन्द्रसेन विराट, विकल साकेती, बलवीर सिंह रंग आदि की ग़ज़लों में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा तथा निरंकार देव सेवक, गिरिराज शरण अग्रवाल, कुंअर बेचैन, ज़हीर कुरैषी, उर्मिलेष, ओंकार गुलषन सहित आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल के प्रायः समस्त रचनाधर्मियों की ग़ज़लों में दैनिक बोलचाल की हिन्दुस्तानी भाषा के दर्षन होते हैं।"[30]

साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में भाषा का एक चौथा स्वरूप अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग वाला भी मिलता है। ज़हीर कुरैषी और कुंअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में रोजमर्रा में काम आने वाले अंग्रेज़ी शब्दों का ख़ूब प्रयोग किया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिन्दी गजल में भाषाई प्रयोग उसकी प्रभावशीलता और सौंदर्य का प्रमुख आधार है। गजल की भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि संवेदना, कलात्मकता और अर्थगर्भिता का सशक्त उपकरण भी है। संक्षिप्तता, सांकेतिकता, सहजता, कोमलता, व्यंग्यात्मकता तथा गेयता जैसे गुण इसे अन्य काव्य–विधाओं से विशिष्ट बनाते हैं। प्रत्येक शेर सीमित शब्दों में व्यापक भाव और गहन अर्थ प्रस्तुत करता है, जिससे भाषा के चयन और संयोजन की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि हिन्दी गजल की भाषिक संरचना बहुआयामी है, जिसमें उर्दू–फारसी, संस्कृतनिष्ठ हिन्दी, हिन्दुस्तानी तथा अंग्रेजी शब्दावली का संतुलित समावेश देखने को मिलता है। यह विविधता गजल को न केवल समृद्ध बनाती है, बल्कि इसे व्यापक पाठक वर्ग से जोड़ने में भी सहायक होती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी

गजल की भाषा निरंतर विकसित होती हुई एक सशक्त, प्रभावपूर्ण और जनसामान्य से जुड़ी अभिव्यक्ति है, जो समय के साथ अपनी प्रासंगिकता बनाए रखती है।

सन्दर्भ सूची :–

1. साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल : षिल्प और संवेदना–डॉ. सादिका नवाब 'सहर', प्रकाशन संस्थान दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 246
2. उर्दू ग़ज़ल–डॉ. युसुफ हुसैन, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, पृ. 88–89
3. मीर की कविता और भारतीय सौन्दर्यबोध–षम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 30
4. वही, पृ. 30
5. वही, पृ. 32–33
6. उर्दू ग़ज़ल–डॉ. युसुफ हुसैन, दारूल मुसन्निफ़िन एकेडमी, आजमगढ़, प्रथम संसकरण पृ. 78
7. साये में धूप–दुष्यंत कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवी आवृत्ति–2013, पृ. 15
8. मुकद्दमा–ए–षेर–ओ–षायरी–मौलाना अल्ताफ़ हुसैन 'हाली', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृ. 111
9. साये में धूप–दुष्यंत कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवी आवृत्ति–2013, पृ. 13
10. साये में धूप–दुष्यंत कुमार, पृ. 30
11. धूप के हस्ताक्षर, ज्ञान प्रकाष विवेक, कादम्बरी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 12
12. साये में धूप, दुष्यंत कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवी आवृत्ति, पृ. 21
13. समय से मुठभेड़, अदम गोंडवी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृत्ति, पृ. 43
14. तुमको ख़बर होने तक–हिन्दुस्तानी ग़ज़ल विषेषांक, खण्ड–1, सम्पादक–अमित मनोज, कोथल कलां, महेन्द्रगढ़, हरियाणा–2017–18, पृ. 43
15. हिन्दी ग़ज़लः उद्भव और विकास–रोहिताष्व अस्थाना, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ. 330–31
16. हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना–सरदार मुजावर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 12
17. साये में धूप–दुष्यंत कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण पृ. 57
18. हिन्दी ग़ज़ल का सौन्दर्यषास्त्रीय अध्ययन–डॉ. राम प्रकाष, पृ. 242
19. चाँदनी का दुःख–ज़हीर कुरैषी, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, प्रथम संस्करण, पृ. 7
20. बेला–निराला, पराग पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 103

21. हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना–सरदार मुजावर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण पृ. 15
22. हिन्दी ग़ज़लः उद्‌भव और विकास, डॉ. रोहिताष्व अस्थाना, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ. 337
23. ग़ज़लें ही ग़ज़लें; शेरजंग गर्ग, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 197
24. एक टुकड़ा धूप ; ज़हीर कुरैषी, पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 33
25. शामियाने कांच के ; कुँअर बेचैन, प्रगीत प्रकाशन गाजियाबाद–1983, पृ. 43
26. हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना : सरदार मुजावर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 14
27. पारदर्षी पर्त– रामवतार चेतन, पराग प्रकाशन, दिल्ली–1978, पृ. 101
28. रस्सियाँ पानी की : कुंअर बेचैन, प्रगीत प्रकाशन, गाजियाबाद, 1987, पृ. 82
29. हिन्दी ग़ज़ल की भाषिक संरचना, सरदार मुजावर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 14
30. हिन्दी ग़ज़ल : उद्‌भव और विकास, रोहिताष्व अस्थाना, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, 2017, पृ. 341